शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

अबादी बानो बेगमः स्वतन्त्रता आंदोलन की गुमनाम व्यक्तित्व

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 16.06.2021

डॉ0 पंकज शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
एन0ए0एस0 कालिज, मेरठ
ईमेलः drpankajsharma1656@gmail.com

सारांश

संपूर्ण विश्व के किसी भी आंदोलन को यदि हम देखे तो उसमें पुरूषों के साथ–साथ कहीं न कहीं महिलाओं की भी भागीदारी रही है। भारत के संदर्भ में हम विशेष रूप से देखते है कि यहाँ की महिलाओं ने प्राचीन काल से ही समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ब्रिटिश काल में भी चाहे वह 1857 ई0 की क्रांति हो या भारतीय स्वतन्त्रता के लिये चलाये गये विभिन्न आन्दोलन भारतीय महिलाओं ने उनमें कंधे से कंधा मिलाकर पुरूषों का साथ दिया। इनमें रानी लक्ष्माबाई, हजरत महल, सरोजनी नायडू, ऐनीबेसेन्ट आदि कुछ महिलाओं के योगदान की चर्चा हमें हर जगह दिखायी देती है लेकिन अनेक महिलायें ऐसी भी है जिनके अविस्मरणीय योगदान के विषय में जनता को या तो नाममात्र की जानकारी है या बिल्कुल भी नहीं है। प्रस्तुत शोध पत्र में एक ऐसी ही मुस्लिम महिला व्यक्तित्व बाई अम्मान के स्वतन्त्रता आंदोलन में उनके महत्वपूर्ण योगदान को सामने लाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

अबादी बानो बेगम जिन्हें बाई अम्मान के नाम से भी जाना जाता है, उनका जन्म उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले के एक सम्पन्न राष्ट्रवादी परिवार में 1850 ई0 में हुआ था। इनका विवाह कम उम्र में ही रामपुर रियासत के अधिकारी अब्दुल अली खान से हो गया था। अल्प समय में ही अब्दुल अली की हैजे के कारण मृत्यु हो गयी। उसके पश्चात् अबादी बानो बेगम ने अकेले ही अपने दो पुत्र व पाँच पुत्रियों का पालन–पोषण किया, इन्होंने स्वयं कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी लेकिन अपने बच्चों को बरेली में अंग्रेजी माध्यम से अच्छी शिक्षा दिलवायी।

खिलाफत आंदोलन के जनक मुहम्मद जौहर अली एवं शौकत अली जिन्हें इतिहास में अली बंधुओं के नाम से जाना जाता है, अबादी बानो के ही पुत्र थे। अबादी बानो बेगम का लालन–पोषण एक राष्ट्रवादी परिवार में हुआ था। ऐसी स्थिति में जब इनके पुत्रों के द्वारा भारत में खिलाफत आंदोलन को चलाये जाने का निर्णय लिया गया तब इन्होंने पूरी तरह से उनका समर्थन किया। अबादी बेगम ने स्वयं भी खिलाफत आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 1920 में गांधीजी द्वारा

खिलाफत आंदोलन को हिन्दु–मुस्लिम एकता का उचित अवसर देखते हुये जब इस आंदोलन को असहयोग आंदोलन में सम्मिलित कर लिया तब राष्ट्रवादी विचारों से ओत–प्रोत होने के कारण अम्मान बाई राजनीति में पूरी तरह से सक्रिय हो गई। 1921 में सरकार के द्वारा इनके दोनों पुत्रों को गिरफतार कर लिया गया। तब इनके द्वारा एक विशाल सभा को संबोधित किया गया। ऐसा पहली बार हुआ जब एक मुस्लिम मिहला ने बुर्का पहन कर अंग्रेजो के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इसी समय महात्मा गांधी द्वारा उन्हें इस बात के लिये प्रेरित किया गया कि वे आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए निरन्तर सभाओं को संबोधित करें। खिलाफत आंदोलन व असहयोग आंदोलन से विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं को जोड़ने के लिऐ इनके द्वारा अथक प्रयास किये गये जिसके परिणामस्वरूप हजारों मुस्लिम महिलायें आजादी के आंदोलन में कूद पड़ी।

अबादी बेगम खिलाफत व असहयोग आंदोलन दोनों से सक्रिय रूप से जुड़ी रहीं व भारत के विभिन्न भागों का भ्रमण करके महिलाओं को स्वदेशी का प्रयोग करने और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार करने का संदेश देती रहीं। गांधी जी से प्रभावित होने के कारण इन्होंने खादी के प्रयोग पर विशेष रूप से जोर दिया।

पंजाब की एक सभा में महिलओं को संबोधित करते हुये इन्होंने कहा कि ''माता–पिता आमतौर पर अपनी संतान के लिये मकान और जेवर छोड़ जाते है परन्तु इस संसार में स्वतन्त्रता से बढ़कर कोई चीज नहीं है। इसलिये हमें अपनी संतान के लिये स्वराज्य छोड़कर विदा होना चाहिए लेकिन स्वराज्य मांगने से नही मिलता, उसे प्राप्त करने के लिये महिलाओं में साहस और बलिदान की भावना होनी चाहिए''।

असहयोग आंदोलन के लिसे चंदा इकठ्ठा करने में भी बाई अम्मान की महत्वूपर्ण भूमिका रही। इन्होंने बेगम हजरत मोहनी, बंसती देवी, सरला देवी चौधरी एवं सरोजनी नायडू आदि के साथ मिलकर महिलाओं को 'तिलक स्वराज कोष' में चंदा देने के लिये प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं ने बड़ी संख्या में चंदा दिया।

इन्होंने अपने भाषणों में निरन्तर हिन्दू मुस्लिम की कौमी एकता पर भी बल दिया और साथ ही कहा कि एक होकर ही हम अंग्रेजो से स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। बाई अम्मान की प्रचार के दौरान ये पक्तियां लोगों को बहुत प्रेरित करने का काम करती थी–

''होने वाली बात हो जाये वो हो ही जायेगी
जुल्म करने–करते जालिम खुद बा खुद थक जायेगें''।

अबादी बानो बेगम भारत को स्वतन्त्र देखना चाहती थी इसलिये ये अपनी सभाओं में अंग्रेजो के खिलाफ आंदोलन के लिये लोगों को निरन्तर प्रेरित करती और कहा करती थी कि ''उनकी इच्छा है कि भारत के कुत्ते और बिल्ली भी अंग्रेजो की गुलामी में ना रहे''। इनके इन प्रचार कार्यों के कारण अंग्रेज सरकार के सरकारी दस्तावेज में ये 'खतरनाक महिला' के रूप में दर्ज थी क्योंकि इन्होंने अंग्रेजी शासन को खुली चुनौती देने का काम किया था, इनके मंसूबों को देखते हुए पहले ब्रिटिश सरकार ने इन पर मुकदमा चलाने का निर्णया लिया किन्तु बाद में उन्होंने इनको

कैद करना उचित समझा और मार्च 1922 में इनको बंदी बना लिया गया। परन्तु कुछ समय पश्चात ही इन्हें रिहा कर दिया गया। रिहा होकर अपनी वृद्धावस्था में भी ये निरन्तर देश सेवा का कार्य करती रहीं। 13 नवम्बर 1924 ई0 को बीमारी एवं अंग्रेजो की प्रताड़ना के कारण लगभग 75 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गयी। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अबादी बानो स्वतन्त्रता की लड़ाई में सक्रिय भाग लेने वाली मुस्लिम समाज की प्रथम महिला थी। उन्होंने मुस्लिम समाज की पारम्परिक परम्पराओं को तोड़कर आंदोलन में न केवल स्वयं वरन् विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं को भी भाग लेने के लिये प्रेरित किया जिसके परिणामस्वरूप अनेक मुस्लिम महिलाएं आंदोलन में सक्रिय हो गयी। अतः स्पष्ट है कि इनके द्वारा देश को स्वतन्त्र कराने के लिये किये गये कार्यों को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. सिविल एवं मिलिट्रि गजट, 31 अगस्त, 1922
2. अमृत बाजार पत्रिका, 9 जनवरी 1920
3. होम पालिटिकल फाइल, नवम्बर 1922
4. Shaila Naheed, Indian Women in History.
5. अनूप तनेजा, गांधी, *महिला और राष्ट्रीय आंदोलन* 1920–47, हर आनन्द प्रकाशन